आर्थिक वृद्धि के साथ रोजगार सृजन जरूरी



भारत विगत तीन वर्षों से निरंतर बेहतर आर्थिक प्रदर्शन कर रहा है। देश की सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि लगातार 7% से ऊपर बनी हुई है।

भारत के रोजगार संबंधी महत्वपूर्ण आँकड़े -

- देश की कामकाजी उम्र की आबादी की हिस्सेदारी दो दशक पहले के 62% से बढ़कर 68% हो गई है। यह वृद्धि तब हुई है, जब विकसित अर्थव्यवस्था के कुछ देशों में श्रमबल लगातार गिर रहा है।

- अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के मॉडल आधारित अनुमान के अनुसार, 2001 से 2020 के दौरान 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग में रोजगार की वृद्धि आबादी की वृद्धि से पीछे रही। पर 2021-25 में यह रफ्तार तेज हुई, जिसकी वृद्धि दर 3.5% रही।

- रोजगार लोच, जो आर्थिक वृद्धि की तुलना में रोजगार में होने वाली वृद्धि को मापती है, वह वृद्धि 2021-25 में 0.46 हो गई, जबकि 2011-15 में यह 0.22 थी।

- भारत में बेरोजगारी दर 2023 से 3.1% पर स्थिर है, जो कि 2018 के 6% से कम है।

भारतीय रोजगार परिदृश्य के समक्ष चुनौतियाँ -

- कम श्रम शक्ति भागीदारी दर, शिक्षा और कौशल में निरंतर कायम विसंगति, युवा बेरोजगारी व अनौपचारिक बेरोजगारी की बढ़ती दर इसका कारण है। सर्वाधिक श्रम शक्ति सर्वे के मुताबिक LFPR 2018 के 49.8% से सुधरकर 2025 में 59.3% हो गया। पर यह स्तर वैश्विक औसत 61% से नीचे है। ऐसा श्रम में महिलाओं की कम भागीदारी के कारण है। वियतनाम के 68%, चीन और थाईलैंड के 59% की तुलना में भारत की 32% महिलाएँ ही श्रम भागीदारी करती हैं।

- बढ़ती आकांक्षाओं व शिक्षा तथा कौशल के बीच असंगति के कारण 15-29 आयुवर्ग के युवाओं में बेरोजगारी 2025 में 9.9% रही।

- भारत में महिलाओं के बीच स्वरोजगार अधिक प्रचलन में है। इसका एक अर्थ यह भी हो सकता है कि अर्थव्यवस्था पर्याप्त रोजगार के अवसर नहीं उत्पन्न कर पा रही है।

- 2025 में स्वरोजगार करने वालों की हिस्सेदारी 56.2% थी, जो कोविड-पूर्व स्तर 52.1% से अधिक है।

- आकस्मिक श्रमिकों की हिस्सेदारी 20.2% है। स्वरोजगार व आकस्मिक श्रमिकों की इतनी ज्यादा हिस्सेदारी श्रम बाजार में अनौपचारिक बाजार की व्यापकता को दर्शाती है।

- अनौपचारिक श्रम बाजार पहले ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व स्वचालन के जोखिमों से लड़ रहा है, जो नियुक्तियों के रुझान को प्रभावित करता है।

विभिन्न स्तरों पर रोजगार सृजन व आगे की राह -

- सकल कार्यबल के 43% कार्यबल को रोजगार कृषि से मिलता है। पर सकल मूल्यवर्धन में इसका भाग 20% है। यह कम श्रम उत्पादकता व छिपी बेरोजगारी दर्शाता है। हमें उच्च मूल्य वाली कृषि तथा इससे जुड़ी सहायक गतिविधियों, जैसे बागवानी, पुष्पोत्पादन, मुर्गीपालन और खाद्य प्रसंस्करण में रोजगार सृजन करना चाहिए।

- विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार की हिस्सेदारी 10-12% है, जो कि अन्य एशियाई देशों के इस क्षेत्र में अधिक रोजगार के अनुभव से अलग है। विनिर्माण निर्यात के आँकड़ों के अनुसार, श्रम और संसाधन-प्रधान विनिर्मित वस्तुओं की हिस्सेदारी 2006-2010 के दौरान 29% से घटकर 2021-25 में 20% ही रह गई।

  हमें श्रम-प्रधान विनिर्माण निर्यात; जैसे कपड़ा और परिधान, चमड़ा और जूते-चप्पल, रत्न एवं आभूषण, खिलौने तथा खेल-संबंधी सामान को बढ़ावा देना चाहिए।

- सेवा क्षेत्र में 32% कार्यबल रोजगार पाता है, जिसमें आईटी, सॉफ्टवेयर एवं व्यावसायिक सेवाओं तथा बैंकिंग जैसे क्षेत्रों ने प्रमुख भूमिका निभाई है। थोक व खुदरा व्यापार कुल कार्यबल का 11% रोजगार पाता है। इसके बाद परिवहन और भंडारण (4.5%) और शिक्षा (3.3%) का स्थान है।

  भारत को यात्रा, व्यापार, आतिथ्य, स्वास्थ्य-सेवा और शिक्षा में रोजगार को लक्षित समर्थन देना चाहिए।

- पर्याप्त कौशल व कार्यबल के लिए मानव पूँजी में निवेश करना चाहिए।

- अनौपचारिक क्षेत्र में सामाजिक सुरक्षा संहिता को सही ढंग से लागू किया जाना चाहिए।

*****

AFEIAS